475वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 40 | अष्टम् अंक | मार्च 2018

इस अंक में...

13 अपने भाग्य का नियन्त्रण आप स्वयं कीजिए अन्यथा कोई और करेगा
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
19 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
25 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
34 नवीनतम सामान्य ज्ञान
45 राज्य समाचार
46 रोजगार समाचार
48 खेलकूद
54 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
56 युवा प्रतिभाएं
61 स्मरणीय तथ्य
64 विश्व परिदृश्य
70 फोकस—भारतमाला परियोजना : राजमार्ग क्रान्ति की नई पहल
74 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
76 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
80 आर्थिक लेख—भारत में महिला उद्यमिता का विकास : स्वरूप और सम्भावनाएं
83 स्थानीय स्वशासन लेख—भारत में पंचायती राज व्यवस्था का उद्भव तथा विकास
86 समसामयिक लेख—पैराडाइज पेपर्स : काले पन्नों के सफेद दागी
87 भाषायी लेख—भारत में भाषायी संकट एवं राजनीति
89 मानवाधिकार लेख—संयुक्त राष्ट्र संघ एवं विकलांगों के अधिकार
91 अन्तर्राष्ट्रीय लेख—संयुक्त राष्ट्र विशिष्ट अभिकरण
93 परिवहन लेख—शहरी विकास का नया आयाम : नई मेट्रो रेल नीति
94 कृषि लेख—नाभिकीय कृषि से खाद्य पदार्थों के संरक्षण तथा सर्वांगीण कृषि विकास
96 पर्यावरणीय लेख—हमारा वन्य जीवन विलुप्तीकरण एवं संरक्षण
98 महिलोत्थान लेख—महिला सशक्तिकरण : ग्रामीण स्वरोजगार की ओर बढ़ते कदम
101 सार संग्रह
105 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन—(i) इलाहाबाद उच्च न्यायालय समीक्षा अधिकारी परीक्षा, 2016
117 (ii) छत्तीसगढ़ राज्य पात्रता परीक्षा (SET), 2017
122 (iii) बैंक ऑफ बड़ौदा (पी.ओ.) परीक्षा, 2017
125 (iv) नाबार्ड ग्रेड-A ऑफिसर्स परीक्षा, 2017
126 उद्योग व्यापार जगत्
128 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
130 ऐच्छिक विषय— (i) वाणिज्य-यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
136 (ii) मनोविज्ञान—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2017
144 सामान्य जानकारी—जैव-विविधता संरक्षण, पर्यावरणीय अनुसंधान, जलवायु परिवर्तन एवं प्रदूषण नियंत्रण सम्बन्धी तथ्य : एक दृष्टि में
147 तर्कशक्ति—आई.बी.पी.एस. पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2017
150 संख्यात्मक अभियोग्यता—बैंक ऑफ बड़ौदा (पी.ओ.) परीक्षा, 2017
157 क्या आप जानते हैं ?
158 अपना ज्ञान बढ़ाइए
159 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—पूँजी बाजार की ऊँचाइयाँ भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास का प्रतिबिम्ब है
160 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय
162 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-464 का परिणाम

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

अपने भाग्य का नियन्त्रण आप स्वयं कीजिए अन्यथा कोई और करेगा

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥
– भगवद्गीता (2–47)

भाग्य पर आश्रित न हो पाए कभी आबाद,
भाग्य पर आश्रित न पाए कभी सफलता की राह

कहा किसी अनुभवी ने कि–

भाग्य कर्म से ही बनता और बिगड़ता है ॥
स्वयं कीजिए अपने भाग्य का नियन्त्रण
अन्यथा करेगा कोई अन्य आपको यन्त्रण
पर के अधीन बनना ही अपमान है मानवता का
जीवन निखरता है तब ही जब आप जगाएं
आत्म बल को ।

आपका भाग्य आपके ही संकल्पों से व कर्मों से बनता है और बिगड़ता है. आप अपने संकल्पों को सुधार कर, सँवारकर अपने भाग्य को सही प्रारूप दे सकते हैं.

भाग्य

जो भाव आपने प्रसारित कर दिए उनसे जो भी घटनाएं निर्मित हो गईं, वे ही आपका प्रारब्ध यानि भाग्य बन गईं. आपके कल्प-संकल्प ही आपकी भाग्य रचना करते हैं. आप जैसा सोचते हैं, वैसा बनते जाते हैं. आपके भाग्य का नियन्त्रक आप ही हो सकते हो, किन्तु जब आप ही आलसी बन जाओगे, तो फिर घटनाओं को सही राह नहीं मोड़ पाओगे.

जो लोग उद्यमहीन एवं आत्मविश्वास से विहीन हो जाते हैं, उनकी किस्मत हवा में फहरती ध्वजा की तरह हो जाती है. जिधर हवाएं ले जाएं उधर ही ध्वजा आए-जाए. हमें भी आस-पास के वातावरण की हवाएँ प्रभावित करती ही हैं, अगर हमारे चारों ओर के लोग दुःखी व नकारात्मक निराशाजनक विचारों वाले हैं, तो वे अपनी तरंगों से हमारे ऊपर भी प्रभाव डालते हैं किन्तु ठीक उन्हीं क्षणों में अगर हम सचेत हो जाएं और खुद को सँभाल लें, खुद को उस वातावरण से थोड़ा अप्रभावित करना सीख लें, तो हम अपने भाग्य को अच्छा बनाने में कामयाब हो सकेंगे.

भाग्य का निर्धारक बनेगा आपका दृष्टिकोण

आपका नज़रिया सकारात्मक है, सद्गुणग्राही है, तो निश्चित ही आप सौभाग्य का सृजन करेंगे, किन्तु इसके विपरीत है, तो दुर्भाग्य का.

अगर आप सदा अन्यों की प्रगति को देखकर ईर्ष्या से भरते हो, तो आप स्वयं ही अपने लिए दुर्भाग्य को निर्मित करते हो. ईर्ष्या भरी सोच हो या तुलनात्मक दृष्टिकोण, तुरन्त उसको समझकर छोड़ दीजिए. खुद को न किसी से हीन मानिए न ही उच्च और सतत् खुद के दिलो-दिमाग को उत्साह, प्रेम व लक्ष्य के प्रति समर्पण भावों से भरकर रखिए.

●●●